Total No. of Questions - 5] [Total Pages : 3

**(2062)**

# 9831

## M.A. (IIIrd Semester) Examination

SANSKRIT

(Kavya-Shastra)

Paper–XII

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

**नोट** : नियमित छात्रों के अंक कोष्ठक के बाहर दिए गए हैं। प्राइवेट विद्यार्थियों के अंक कोष्ठक के अन्दर दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों के उत्तर एक ही स्थान पर दें।

1. अधस्तनानां भागद्वयं विशदं व्याख्यायतः –

(क) मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद्वाच्यः।
उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः।।

(ख) अङ्गिनोऽननुसन्धानं प्रकृतीनां विपर्ययः।
अनङ्गस्याभिधानं च रसे दोषाः स्युरीदृशाः।।

(ग) उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलङ्काारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।।

(घ) शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः।
व्याप्नोत्यन्यतप्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः।। 16(20)

2. अधोदत्तानां भागद्वयं विशदं व्याख्यायतः–

(क) यदुक्तमन्यथावाक्यमन्यथाऽन्येन योज्यते।
श्लेषेण काक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथा द्विधा।।

(ख) वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यनित शब्दाः, श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा।।

(ग) ससन्देहस्तु भेदोक्तौ तदनुक्तौ च संशयः।।

(घ) दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्।। 16(20)

3. अधोनिर्दिष्टानां द्वौ दोषौ सलक्षणं सोदाहरणञ्च प्रपिादयत –

(क) अनुचितार्थम् (पदगतम्)।

(ख) अश्लीलत्मव् (वाक्यगतम्)।

(ग) श्रुतिकटुत्वम् (पदैकदेशगतम्)।

(घ) अधिकमपदत्मव् (वाक्यमात्रगतम्)। 16(20)

4. अर्थदोषाणां नामोल्लेखपूर्वकं किञ्चित्पञ्चार्थदोषाणामुदाहरणपुरस्सरं प्रतिपाद्यताम्।

अथवा

गुणस्य परिभाषा का? मम्मटानुसारेण माधुर्यगुणं सोदाहरणं विवेचयत। 16(20)

5. अधस्तनानां द्वावलङ्कारौ सलक्षणं सोदाहरणञ्च प्रतिपादयत –

(क) उपमा।

(ख) निदर्शना।

(ग) दीपक।

(घ) रूपक। 16(20)